पाठ १६

डफली

उद्देश्य :	**छात्रों को/से**
	१. बाजे के नामों से अवगत कराना। २. डफली के बारे में विशेष जानकारी देना। ३. 'ड' व्यंजन का बोध तथा निर्देशित एवं विधिवत लेखन कराना। ४. 'ड' की बारहखड़ी तथा इससे निर्मित शब्दों का पठन एवं सुलेखन कराना। ५. विभक्ति – अधिकरण 'पर' का अभ्यास कराना। ६. 'बजाना', 'गाना', 'नाचना', 'सुनना' आदि क्रियाओं का प्रयोग लिंग-वचन के अनुसार सामान्य वर्तमान काल में सिखाना।
सहायक सामग्री :	१. पाठ्यपुस्तकीय चित्रों के अलावा डफली/अन्य बाजों के चित्र। २. डफली – वस्तु एवं मॉडल। ३. फ़ीतियाँ एवं गत्ते। ४. कम्प्यूटर/इन्टरनेट का उपयोग। ५. साँकोरे परियोजना के अंतर्गत इंटरएक्टिव श्वेतपट का प्रयोग।
बोलचाल / कार्यकलाप	१. छात्रों के पूर्वज्ञान पर आधारित डफली एवं विभिन्न प्रकार के बाजों पर प्रश्नोत्तर। २. पाठ पर आधारित डफली पर प्रबोधक प्रश्न। ३. छात्रों के बीच डफली पर आधारित आदेश-निदेश।
पठन	१. अध्यापक द्वारा आदर्श तथा छात्रों द्वारा कक्षागत, पंक्तिगत, जोड़ीगत तथा व्यक्तिगत निर्देशित अनुकरण सस्वर पठन/वाचन ('ड' के शुद्धोच्चारण पर विशेष ध्यान देते हुए)। २. पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त वाक्य-फ़ीतियों, शब्द-फ़ीतियों, अक्षर-फ़ीतियों, अक्षर-मॉडल की सहायता से आदर्श व अनुकरण पठन। ३. 'ड' की बारहखड़ी तथा 'ड' अक्षर की सहायता से निर्मित शब्दों एवं स्पष्ट उच्चारण पर ध्यान देते हुए आदर्श एवं सस्वर/अनुकरण पठन कराना।
लेखन	१. 'ड' का विधिवत एवं निर्देशित लेखन का अभ्यास कराना। २. 'ड' की बारहखड़ी तथा उससे निर्मित शब्दों का लेखन कराना। ३. अक्षर 'ड' का विभेदीकरण कराना। ४. चित्र-शब्द मिलान। ५. अक्षर-शब्द पूर्ति। ६. विभक्ति 'पर' का अभ्यास। ७. क्रिया 'बजाना' का सामान्य वर्तमान काल में लिंग-वचन के अनुसार।

अतिरिक्त कार्य / अनुभव का विस्तार	१. डफली के चित्र तथा अन्य बाजे के चित्र बनाने एवं उनमें रंग भरने के लिए प्रेरित करना। २. संगीत दिवस तथा अन्य अवसरों पर बच्चों से गीत गवाने तथा वाद्य बजाने को प्रोत्साहित करना। ३. साँकोरे परियोजना के अंतर्गत छात्रों से डफली के चित्र बनवाना और रंग भराना एवं चित्र-शब्द तथा शब्द-शब्द मिलान कराना। ४. कविता/गीत। ५. श्रुतिलेख।	
दिन	**अधिगम क्षेत्र**	**अधिगम बिन्दु**
१	डफली बाजा।	१. (ख) और (ग) – 'ड' को घेरना।
२	डीलू डफली बजाता है।	२. १. (घ) 'ड' का निर्देशित व विधिवत लेखन तथा शब्द प्रतिलिपि।
३	डफली एक बाजा है।	३. २. चित्र-वाक्य मिलान।
४	डफली ढम-ढम बजती है।	४. अक्षर शब्द-पूर्ति।
५	देगची पर ढपनी है। (आवृति)	५. विभक्ति 'पर' का अभ्यास।
६	डीलू डफली बजाता है।	६. क्रिया 'बजाना' का सामान्य वर्तमान काल में लिंग-वचन के अनुसार।
७	कविता-पाठ।	

****

पाठ १७

इन्द्रधनुष

उद्देश्य :	**छात्रों को/से**
	१. इन्द्रधनुष के रंगों से अवगत कराना। २. इन्द्रधनुष के बारे में विशेष जानकारी देना। ३. व्यंजन 'ष' का बोध एवं पहचान कराना। ४. व्यंजन 'ष' का विधिवत तथा निर्देशित लेखन। ५. कुछ क्रियाओं का अभ्यास कराना – देखना, गिनना, रहना (सामान्य वर्तमान काल में लिंग-वचन के अनुसार)। ६. संख्यावाचक विशेषण – व्यवकलन कार्य कराना। *(व्यवकलन – संख्या घटाना)*
सहायक सामग्री :	१. पाठ्यपुस्तकीय के चित्रों के अलावा इन्द्रधनुष/अन्य मौसम संबंधी चित्र। २. फ़ीतियाँ एवं गत्ते। ३. कम्प्यूटर/इन्टरनेट का उपयोग। ४. साँकोरे परियोजना के अंतर्गत इंटरएक्टिव श्वेतपट का प्रयोग। ५. रंगों का चित्र/चार्ट।
बोलचाल / कार्यकलाप	१. छात्रों के पूर्वज्ञान पर आधारित इन्द्रधनुष एवं मौसम पर प्रश्नोत्तर। २. पाठ पर आधारित इन्द्रधनुष पर प्रबोधक प्रश्न। ३. छात्रों के बीच इन्द्रधनुष पर आधारित आदेश-निर्देश।
पठन	१. अध्यापक द्वारा आदर्श तथा छात्रों द्वारा कक्षागत, पंक्तिगत, जोड़ीगत तथा व्यक्तिगत निर्देशित अनुकरण सस्वर पठन/वाचन ('ष' के शुद्धोच्चारण पर विशेष ध्यान देते हुए)। २. पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त वाक्य-फ़ीतियों, शब्द-फ़ीतियों, अक्षर-फ़ीतियों, अक्षर-मॉडल की सहायता से आदर्श व अनुकरण पठन। ३. 'ष' की बारहखड़ी तथा 'ष' अक्षर की सहायता से निर्मित शब्दों एवं स्पष्ट उच्चारण पर ध्यान देते हुए आदर्श एवं सस्वर/अनुकरण पठन कराना।
लेखन	१. अक्षर-पहचान के लिए 'ष' को घेरना। २. 'ष' का निर्देशित एवं विधिवत लेखन। ३. चित्र-वाक्य मिलान ('ष' से निर्मित शब्दों पर आधारित वाक्य)। ४. चित्र की सहायता से शब्द-पूर्ति। ५. सामान्य वर्तमान काल (लिंग-वचन के अनुसार) – क्रिया का उचित रूप चुनकर लिखना। ६. संख्यावाचक विशेषण – संख्या पर व्यवकलन काम कराना। ७. पठित अक्षरों से शब्द-निर्माण।

अतिरिक्त कार्य / अनुभव का विस्तार	१. कुछ पाठगत वाक्यों एवं शब्दों का प्रतिलेखन कराना। २. श्रुतिलेख ३. विभिन्न रंगों से परिचित कराना। ४. चित्र की सहायता से सीखे हुए अक्षरों एवं शब्दों की पहचान के लिए टोलीगत कार्य। ५. कविता/गीत। ६. साँकोरे परियोजना के अंतर्गत छात्रों से इन्द्रधनुष के चित्र बनवाना और रंग भराना एवं चित्र-शब्द तथा शब्द-शब्द मिलान कराना।	
दिन	**अधिगम क्षेत्र**	**अधिगम बिन्दु**
१	इन्द्रधनुष के रंग।	१. (ख) और (ग) – 'ष' को घेरना।
२	पीयूष इन्द्रधनुष देखता है।	२. १. (घ) 'ष' का निर्देशित व विधिवत लेखन तथा शब्द प्रतिलिपि।
३	इन्द्रधनुष में सात रंग हैं।	३. चित्र-वाक्य मिलान।
४	धूप चमक रही है।	४. शब्द-पूर्ति।
५	पीयूष इन्द्रधनुष देखता है।	५. क्रिया का अभ्यास।
६	इन्द्रधनुष में सात रंग हैं।	७. संख्यावाचक विशेषण पर संख्या घटाने का कार्य कराना।
७	कविता-पाठ।	७. अक्षरों से शब्द निर्माण।

****

पाठ १८

हाथ

उद्देश्य :	**छात्रों को/से**
	१. हाथ के कुछ प्रकार्यों से अवगत कराना। २. हथेली से परिचित कराना। ३. व्यंजन 'थ' तथा मात्रा 'ै' का बोध एवं पहचान। ४. 'थ' तथा 'ै' का विधिवत एवं निर्देशित लेखन। ५. पंचेन्द्रियों के प्रकार्य संबंधी क्रियाओं का सामान्य वर्तमान काल में (लिंग-वचन के अनुसार) अभ्यास कराना। ६. विभक्तिरहित अकारान्त पुलिंग शब्द बहुवचन में।
सहायक सामग्री :	१. पाठ्यपुस्तकीय चित्रों के अतिरिक्त अध्यापक अपनी ओर से हाथ, नाक, कान, मुँह, हथेली, उँगली इत्यादि...अंगों के चित्र ला सकते हैं। २. गत्ते, वाक्य-फ़ीतियाँ, शब्द-फ़ीतियाँ तथा अक्षर-फ़ीतियाँ। ३. कंप्यूटर व इन्टरनेट की सहायता से शरीर के विभिन्न अंगों के प्रकार्यों के बारे में जानकारी देना। ४. साँकोरे परियोजना के अंतर्गत इंटरएक्टिव श्वेतपट का उपयोग।
बोलचाल / कार्यकलाप	१. अध्यापक छात्रों के पूर्वज्ञान के आधार पर शरीर के अंग संबंधी प्रश्न करेंगे – - हाथ, पैर, कान इत्यादि की ओर संकेत करते हुए – यह क्या है ? / ये क्या हैं ? तुम्हारे कितने पैर हैं ? तुम्हारे कितने कान हैं ? इत्यादि...। - यह किसका हाथ है ? यह किसका कान है ? इत्यादि...। २. आदेश-निर्देश एवं प्रश्नोत्तर (अध्यापक-छात्र तथा छात्र-छात्र के बीच) - तुम हाथ धोओ। तुम किससे हाथ धोते/धोती हो ? - तुम हाथ जोड़ो। तुम प्रार्थना करो। तुम नमस्ते करो। तुम हाथ से क्या करते / करती हो ? - तुम अपनी उँगली बताओ। तुम उँगली से क्या करते / करती हो ? ३. पाठ्यपुस्तकीय चित्रों पर प्रश्नोत्तर।

पठन	१. ‘े’ तथा ‘थ’ के शुद्धोच्चारण पर विशेष बल देते हुए पाठ का अध्यापक द्वारा आदर्श व निर्देशित तथा छात्रों द्वारा सामूहिक, पंक्तिगत, जोड़ीगत एवं व्यक्तिगत अनुकरण सस्वर पठन। २. ‘थ’ की आंशिक बारहखड़ी का आदर्श एवं अनुकरण पठन। ३. पाठ का मेधावी छात्रों द्वारा आदर्श तथा अन्य छात्रों द्वारा अनुकरण पठन। ४. वाक्य-फ़ीतियों, शब्द-फ़ीतियों, अक्षर-फ़ीतियों तथा अक्षर-मॉडल की सहायता से आदर्श एवं अनुकरण पठन। ५. कंप्यूटर/इंटरनेट की सहायता से ‘े’ तथा ‘थ’ का शुद्धोच्चारण।
लेखन	१. अक्षर-पहचान के लिए ‘े’ तथा ‘थ’ को घेरना। २. ‘े’ तथा ‘थ’ का निर्देशित एवं विधिवत लेखन। ३. कुछ वाक्यों का सुलेखन। ४. शब्द-चित्र मिलान। ५. ‘मैं’ सर्वनाम के साथ कुछ क्रियाओं का सामान्य वर्तमान काल में लिंग के अनुसार प्रयोग। ६. विभक्तिसहित अकारांत पुलिंग शब्द बहुवचन में। ७. ‘त’, ‘थ’, ‘ट’ तथा ‘ठ’ से शब्द-निर्माण। ८. चित्र में रंग भरना तथा उसके नीचे वाक्य का प्रतिलेखन।
अतिरिक्त कार्य	१. कुछ पाठगत शब्दों एवं वाक्यों को देखकर लिखना। २. शब्दों को क्रम में रखकर सही वाक्य लिखना। ३. टोलीगत कार्य – गत्ते पर हाथ, उँगली, हथेली तथा कलाई के चित्र साटकर नीचे शब्दों के नाम लिखना। ४. चित्र, वस्तु तथा मॉडल की सहायता से शब्दों की पहचान के लिए टोलीगत कार्य कराना। ५. इंटरएक्टिव श्वेतपट की सहायता से वाक्यों में रिक्त-पूर्ति। ६. कविता-पाठ।

दिन	**अधिगम क्षेत्र**	**अधिगम बिन्दु**
१	हाथ और हथेली।	१. (ख), (ग) और (घ) ‘े’ तथा ‘थ’ को घेरना।
२	सफ़ाई – साबुन और पानी से हाथ धोना।	१. (ङ) ‘े’ तथा ‘थ’ का निर्देशित एवं विधिवत लेखन।
३	हथेली में फूल लेना – हाथ जोड़ना।	१. (च) सुलेखन।

४	मेरे दो हाथ.....छूता हूँ।	४. शब्द-चित्र मिलान।
५	मैं प्रार्थना करता हूँ.....छूता हूँ।	३. (क) और (ख) क्रिया का उचित रूप चुनकर लिखना।
६	मैं हाथ से लिखता हूँ.....छूता हूँ।	४. विभक्तिरहित अकारान्त पुलिंग शब्द बहुवचन में।
७	मेरे दो हाथ.....छूता हूँ।	५. 'त', 'थ', 'ट' और 'ठ' से शब्द-निर्माण।
८	माली अपने हाथ से पौधे सींचता है।	६. चित्र में रंग भरना और उसके नीचे संबंधित वाक्य का प्रतिलेखन।

****

पाठ १९

गौरैया

उद्देश्य :	छात्रों को/से
	१. गौरैया से परिचित कराना। २. ‘ै’ और ‘ौ’ का बोध एवं पहचान कराना। ३. ‘ै’ और ‘ौ’ का विधिवत एवं निर्देशित लेखन। ४. क्रियाएँ – चुगना, रहना और उड़ना (सामान्य वर्तमान काल में लिंग-वचन के अनुसार)। ५. विभक्तिरहित आकारान्त पुलिंग शब्द में रूपान्तर।
सहायक सामग्री :	१. पाठ्यपुस्तकीय चित्रों के अलावा अध्यापक अपनी ओर से गौरैया के चित्र ला सकते हैं। २. जहाँ सम्भव हो वहाँ अध्यापक छात्रों को स्कूल के आँगन में आने वाली गौरैयों को दिखा सकता है। ३. गत्ते। ४. वाक्य-फ़ीतियाँ, शब्द-फ़ीतियाँ एवं अक्षर-फ़ीतियाँ। ५. साँकोरे परियोजना के अंतर्गत अध्यापक इंटरएक्टिव श्वेतपट का प्रयोग कर सकते हैं।
बोलचाल / कार्यकलाप	१. परिचित पक्षियों (मैना, तोता, इत्यादि...) पर प्रश्नोत्तर। २. अध्यापक-छात्र तथा छात्र-छात्र के बीच गौरैया संबंधी प्रश्नोत्तर। ३. पाठ पर आधारित प्रबोधक प्रश्न।
पठन	१. अध्यापक द्वारा आदर्श तथा छात्रों द्वारा कक्षागत, पंक्तिगत, जोड़ीगत तथा व्यक्तिगत निर्देशित अनुकरण सस्वर पठन/वाचन (‘ै’ और ‘ौ’ के शुद्धोच्चारण पर विशेष ध्यान देते हुए)। २. पाठ्यपुस्तक के अलावा वाक्य-फ़ीतियों, शब्द-फ़ीतियों तथा अक्षर-फ़ीतियों की सहायता से आदर्श व अनुकरण पठन।
लेखन	१. ‘ै’ और ‘ौ’ को घेरना। २. ‘ै’ और ‘ौ’ का विधिवत एवं निर्देशित लेखन। ३. वाक्य-चित्र मिलान। ४. विभक्तिसहित आकारान्त पुलिंग शब्द में रूपान्तर। ५. क्रियाएँ ‘चुगना’, ‘उड़ना’ और ‘बैठना’ सामान्य वर्तमान काल में (लिंग-वचन के अनुसार)।

<table>
<tr><td>अतिरिक्त कार्य</td><td colspan="2">१. श्रुतिलेखन।
२. साँकोरे – वाक्य में सही शब्द से रिक्त-पूर्ति।
३. कविता-पाठ।
४. गौरैया का चित्र बनाकर रंग भरना तथा नीचे नाम लिखना।
५. टोलीगत कार्य – गौरैया के रेखाचित्र पर कोलाज़।
६. टोलीगत कार्य – तोड़े गए शब्दों को जोड़कर सही शब्द बनाना।</td></tr>
<tr><td>दिन</td><td>अधिगम क्षेत्र</td><td>अधिगम बिन्दु</td></tr>
<tr><td>१</td><td>गौरैया के पंख।</td><td>१. (ख) ‘ें’ और ‘ों’ को घेरना।</td></tr>
<tr><td>२</td><td>गौरैया की चोंच।</td><td>१. (ङ) ‘ें’ और ‘ों’ का विधिवत लेखन।</td></tr>
<tr><td>३</td><td>गौरैया एक पक्षी है।</td><td>३. वाक्य-शब्द मिलान।</td></tr>
<tr><td>४</td><td>गौरैया घोंसले में रहती है।</td><td>४. विभक्तिसहित आकारान्त पुलिंग शब्द में रूपान्तर।</td></tr>
<tr><td>५</td><td>गौरैया दाना चुगती है।</td><td>५. क्रियाएँ – वर्तमान काल में।</td></tr>
<tr><td>६</td><td>कविता-पाठ।</td><td></td></tr>
</table>

****